कथा सरिता

जो करोगे सो पाओगे

एक औरत अपने परिवार के सदस्यों के लिए रोज़ाना भोजन पकाती थी और एक रोटी वह वहाँ से गुज़रने वाले किसी भी भूखे के लिए पकाती थी। वह उस रोटी को खिड़की के सहारे रख दिया करती थी, जिसे कोई भी ले सकता था। एक कुबड़ा व्यक्ति रोज़ उस रोटी को ले जाता और बजाय धन्यवाद देने के अपने रस्ते पर चलता हुआ वह कुछ इस तरह बड़बड़ाता- 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा'। दिन गुज़रते गए और ये सिलसिला चलता रहा। वो कुबड़ा रोज रोटी लेके जाता रहा और इन्ही शब्दों को बड़बड़ाता - जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा।

वह औरत उसकी इस हरकत से तंग आ गयी और मन ही मन खुद से कहने लगी कि- 'कितना अजीब व्यक्ति है, एक शब्द धन्यवाद का तो देता नहीं है, और न जाने क्या-क्या बड़बड़ाता रहता है, मतलब क्या है इसका। एक दिन क्रोधित होकर उसने एक निर्णय लिया और बोली- मैं इस कुबड़े से निजात पाकर रहूंगी। और उसने क्या किया कि उसने उस रोटी में ज़हर मिला दिया जो वो रोज़ उसके लिए बनाती थी, और जैसे ही उसने रोटी को खिड़की पर रखने की कोशिश की, कि अचानक उसके हाथ काँपने लगे और रुक गये और वह बोली- हे भगवान, मैं ये क्या करने जा रही थी? उसने तुरंत उस रोटी को चूल्हे की आँच में जला दिया। एक ताज़ी रोटी बनायी और खिड़की के सहारे रख दी। हर रोज़ की तरह वह कुबड़ा आया और रोटी ले के... 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा, और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा' बड़बड़ाता हुआ चला गया। इस बात से बिल्कुल बेख़बर कि उस महिला के दिमाग में क्या चल रहा है। हर रोज़ जब वह महिला खिड़की पर रोटी रखती थी तो वह भगवान से अपने पुत्र की सलामती और अच्छी सेहत और घर वापसी के लिए प्रार्थना करती थी, जो कि अपने सुन्दर भविष्य के निर्माण के लिए कहीं बाहर गया हुआ था। महीनों से उसकी कोई ख़बर नहीं थी। ठीक उसी शाम को उसके दरवाज़े पर एक दस्तक होती है.. वह दरवाज़ा खोलती है और भौचक्की रह जाती है, वह अपने बेटे को अपने सामने खड़ा देखती है। वह पतला और दुबला हो गया था, उसके कपड़े फटे हुए थे और वह भूखा भी था, भूख से वह कमज़ोर हो गया था। जैसे ही उसने अपनी माँ को देखा, उसने कहा- माँ, यह एक चमत्कार है कि मैं यहाँ हूँ। आज जब मैं घर से एक मील दूर था, मैं इतना भूखा था कि मैं गिर गया, मैं मर गया होता!

लेकिन तभी एक कुबड़ा वहाँ से गुज़र रहा था। उसकी नज़र मुझ पर पड़ी और उसने मुझे अपनी गोद में उठा लिया। भूख के मारे मेरे प्राण निकल रहे थे। मैंने उससे खाने को कुछ मांगा। उसने नि:संकोच अपनी रोटी मुझे यह कह कर दे दी कि- मैं हर रोज़ यही खाता हूँ, लेकिन आज मुझसे ज़्यादा ज़रूरत इसकी तुम्हें है.. सो ये लो और अपनी भूख को तृप्त करो। जैसे ही माँ ने उसकी बात सुनी, माँ का चेहरा पीला पड़ गया और अपने आप को सम्भालने के लिए उसने दरवाज़े का सहारा लिया। उसके मस्तिष्क में वह बात घूमने लगी कि कैसे उसने सुबह रोटी में ज़हर मिलाया था, अगर उसने वह रोटी आग में जला के नष्ट नहीं की होती तो उसका बेटा उस रोटी को खा लेता और अंजाम होता उसकी मौत। और इसके बाद उसे उन शब्दों का मतलब बिल्कुल स्पष्ट हो चुका था- 'जो तुम बुरा करोगे वह तुम्हारे साथ रहेगा,और जो तुम अच्छा करोगे वह तुम तक लौट के आएगा'।

आलोचना या आत्ममंथन

एक बार की बात है, एक नवविवाहित जोड़ा किसी किराए के घर में रहने पहुंचा। अगली सुबह, जब वे नाश्ता कर रहे थे, तभी पत्नी ने खिड़की से देखा कि सामने वाली छत पर कुछ कपड़े फैले हैं, 'लगता है इन लोगों को कपड़े साफ़ करना भी नहीं आता। ज़रा देखो तो कितने मैले लग रहे हैं?' पति ने उसकी बात सुनी पर अधिक ध्यान नहीं दिया। एक-दो दिन बाद फिर उसी जगह कुछ कपड़े फैले थे। पत्नी ने उन्हें देखते ही अपनी बात दोहरा दी, कब सीखेंगे ये लोग कि कपड़े कैसे साफ़ करते हैं ! पति सुनता रहा पर इस बार भी उसने कुछ नहीं कहा। पर अब तो ये आये दिन की बात हो गयी, जब भी पत्नी कपड़े फैले देखती भला-बुरा कहना शुरू कर देती। लगभग एक महीने बाद वे यूँ ही बैठ कर नाश्ता कर रहे थे। पत्नी ने हमेशा की तरह नज़रें उठायीं और सामने वाली छत की तरफ देखा, अरे वाह! लगता है इन्हें अक्ल आ ही गयी, आज तो कपड़े बिल्कुल साफ़ दिख रहे हैं, ज़रूर किसी ने टोका होगा! पति बोला, नहीं उन्हें किसी ने नहीं टोका। तुम्हें कैसे पता? पत्नी ने आश्चर्य से पूछा। 'आज मैं सुबह जल्दी उठ गया था और मैंने इस खिड़की पर लगे काँच को बाहर से साफ़ कर दिया, इसलिए तुम्हे कपड़े साफ़ नज़र आ रहे हैं' पति ने बात पूरी की। ज़िन्दगी में भी यही बात लागू होती है; बहुत बार हम दूसरों को कैसे देखते हैं ये इस पर निर्भर करता है कि हम खुद अन्दर से कितने साफ़ हैं! किसी के बारे में भला-बुरा कहने से पहले अपनी मनोस्थिति देख लेनी चाहिए और खुद से पूछना चाहिए कि क्या हम सामने वाले में कुछ बेहतर देखने के लिए तैयार हैं या अभी भी हमारी खिड़की गन्दी है! सोचें व विचार करें कि पहले क्या ज़रूरी है आलोचना या आत्ममंथन?

हम केवल निमित्त...

आज हमने भंडारे में भोजन करवाया। आज हमने ये बांटा, आज हमने वो दान किया.. हम अक्सर ऐसा कहते और मानते हैं। इसी से सम्बंधित एक अविस्मरणीय कथा सुनिए... एक लकड़हारा रात-दिन लकड़ियां काटता, मगर कठोर परिश्रम के बावजूद उसे आधा पेट भोजन ही मिल पाता था। एक दिन उसकी मुलाकात एक साधु से हुई। लकड़हारे ने साधु से कहा कि जब भी आपकी प्रभु से मुलाकात हो जाए, मेरी एक फरियाद उनके सामने रखना और मेरे कष्ट का कारण पूछना। कुछ दिनों बाद उसे वह साधु फिर मिला। लकड़हारे ने उसे अपनी फरियाद की याद दिलाई तो साधु ने कहा कि- 'प्रभु ने बताया है कि लकड़हारे की आयु 60 वर्ष है और उसके भाग्य में पूरे जीवन के लिए सिर्फ पाँच बोरी अनाज है। इसलिए प्रभु उसे थोड़ा अनाज ही देते हैं ताकि वह 60 वर्ष तक जीवित रह सके।' समय बीता। साधु उस लकड़हारे को फिर मिला तो लकड़हारे ने कहा- 'ऋषिवर...!! अब जब भी आपकी प्रभु से बात हो तो मेरी यह फरियाद उन तक पहुँचा देना कि वह मेरे जीवन का सारा अनाज एक साथ दे दें, ताकि कम से कम एक दिन तो मैं भरपेट भोजन कर सकूं।' अगले दिन साधु ने कुछ ऐसा किया कि लकड़हारे के घर ढ़ेर सारा अनाज पहुँच गया। लकड़हारे ने समझा कि प्रभु ने उसकी फरियाद कबूल कर उसे उसका सारा हिस्सा भेज दिया है। उसने बिना कल की चिंता किए, सारे अनाज का भोजन बनाकर फकीरों और भूखों को खिला दिया और खुद भी भरपेट खाया। लेकिन अगली सुबह उठने पर उसने देखा कि उतना ही अनाज उसके घर फिर पहुंच गया है। उसने फिर गरीबों को खिला दिया। फिर उसका भंडार भर गया। यह सिलसिला रोज़-रोज़ चल पड़ा और लकड़हारा लकड़ियां काटने की जगह गरीबों को खाना खिलाने में व्यस्त रहने लगा। कुछ दिन बाद वह साधु फिर लकड़हारे को मिला तो लकड़हारे ने कहा- 'ऋषिवर! आप तो कहते थे कि मेरे जीवन में सिर्फ पाँच बोरी अनाज हैं, लेकिन अब तो हर दिन मेरे घर पाँच बोरी अनाज आ जाता है। साधु ने समझाया, तुमने अपने जीवन की परवाह ना करते हुए अपने हिस्से का अनाज गरीब व भूखों को खिला दिया। इसीलिए प्रभु अब उन गरीबों के हिस्से का अनाज तुम्हें दे रहे हैं। कथा का मर्म है कि किसी को भी कुछ भी देने की शक्ति हम में है ही नहीं, हम देते वक्त ये सोचते हैं, कि जिसको कुछ दिया तो ये मैंने दिया! दान, वस्तु, ज्ञान, यहाँ तक कि अपने बच्चों को भी कुछ देते दिलाते हैं, तो कहते हैं मैंने दिलाया । वास्तविकता ये है कि वो उनका अपना है, आपको सिर्फ परमात्मा ने निमित्त मात्र बनाया है ताकि उन तक उनकी ज़रूरतें पहुँच सकें। तो निमित्त होने का घमंड कैसा!

मऊ-उ.प्र.। दारा सिंह चौहान को उत्तर प्रदेश में जीत की बधाई एवं कैबिनेट मंत्री के रूप में सफल कार्यकाल की शुभकामना देने हेतु ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए कैबिनेट मंत्री दारा सिंह चौहान। साथ हैं ब्र.कु. विमला।

महाशिवरात्रि महोत्सव

आवला-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम के दौरान एस.डी.एम. प्रमिल कुमार सिंह को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पार्वती। साथ हैं ब्र.कु. नीता तथा अन्य।

कल्याणकारी यज्ञ को...

- पेज 7 का शेष

योग व पवित्रता का सहयोग दो

शक्तिशाली आत्मायें, योगी आत्मायें, अपनी श्रेष्ठ वृत्ति से बहुत कुछ कर सकती हैं। परन्तु ऐसा न हो कि जिन्होंने जीवन स्वाहा कर दिया, वे विघ्न-युक्त हों और जो घर-गृहस्थ में रहते हैं वे निर्विघ्न हों। यदि ऐसा हुआ तो संसार ऐसी आत्माओं पर अवश्य हँसेगा।

जीवन स्वाहा करने वालों को ही महान योगी व पवित्रता की देवी बनना चाहिए। यदि ये दो शक्तियाँ हमारे पास होंगी, तो चाहे कोई अन्य कितनी भी गुट बाजी करे, चाहे कितने भी प्रयास एकता को तोड़ने के करे, चाहे कितनी भी गलत शिकायतें करे, कुछ भी कर नहीं पायेगा।

तो आओ, यज्ञ को व स्वयं को निर्विघ्न बनाने के लिए हम प्रतिदिन कुछ विशेष योग अभ्यास करें। इस स्वमान को बढ़ाएं कि हम तो सम्पूर्ण विश्व को विघ्नों से मुक्त करने वाले हैं, तब भला हमारे पास विघ्न कहाँ से आये। योग के वायब्रेशन्स व शुभ भावनाओं के वायब्रेशन्स के द्वारा हम सब कुछ कर सकते हैं। हमने पवित्रता का पथ चुना है, सर्वस्व दांव पर लगाया है, कहीं हमें तथाकथित पाण्डवों की तरह भटकना न पड़े। पवित्रता की दिव्यता के आगे तो सम्पूर्ण विश्व झुकेगा। तब भला विश्व को झुकाने वाले किसी कमज़ोरी के आगे कैसे झुक सकते हैं।

हे यज्ञ प्रेमियों...

हमारा सम्बोधन उस महान व पवित्र ब्राह्मण परिवार को है, जो जहाँ तहाँ इस यज्ञ से संलग्न है। ज़रा विचार करो -

तुम यहाँ क्यों आए हो..? तुमने अपना जीवन क्यों कुर्बान किया...? तुमने यह त्याग तपस्या का पथ क्यों चुना...?

चलो चलें स्वचिंतन के तले में ... अब भी क्या व्यर्थ की ओर झुकाव है, तम्हें अब चाहिए क्या... सब कुछ तो तुम्हें प्राप्त है... कहीं ऐसा तो नहीं कि अपना सब कुछ छोड़कर तुम पुन: माया में उलझ गए हो...!

भगवान ने तुम्हें यज्ञ की ज़िम्मेदारी दी है... सोचो क्यों... योग्य जानकर, अब भगवान से बेवफाई न करना... उसकी आशाओं के दीप जलाना, स्वयं भी उमंग में रहना व औरों को भी व्यर्थ से मुक्त करना।

भगवान ने स्वयं आह्वान किया है ...''अब मेरे यज्ञ को निर्विघ्न बनाओ'' - कितना सुन्दर व भाव भरा आह्वान है... कौन आगे आयेंगे, कौन त्याग करेंगे... जो करेंगे वे महान होंगे, वे पूजनीय होंगे। मुख्य विघ्न अपवित्रता का, त्याग की कमी का है, तेरे मेरे का ही है। इसे झटके से तोड़ दो। भगवान की सुनो तो वह तुम्हारी जन्म जन्म सुनेगा।